एक-दूसरे से सीखते हैं चिम्पैंज़ी

तीन साल पहले एक दिन एक नर चिम्पैंज़ी ने काई का एक टुकड़ा उठाकर उसे पानी में डाला। फिर उसने पानी में तरबतर इस काई को अपने मुंह के पास ले जाकर निचोड़ा और पानी पी लिया। यह घटना यूगांडा के बुडोंगो जंगल की है। नर चिम्पैंज़ी को ऐसे करते एक मादा चिम्पैंज़ी नम्बी ने देखा। नम्बी ने उसकी नकल की और पानी पीया। छः दिनों के अंदर काई को पानी में भिगोकर पानी पीना पूरे समुदाय में फैल गया।

यह बात नवंबर 2011 की है। इससे पहले चिम्पैंज़ियों को किसी क्रिया की नकल करते सिर्फ नियंत्रित प्रयोगों में ही देखा गया था। बुडोंगो जंगल की इस घटना की गवाह रहीं कैथरीन होबैटर और वे यह पक्का करना चाहती थीं कि पूरे चिम्पैंज़ी कबीले ने स्पंज से पानी पीना देख-देखकर सीखा है न कि हरेक ने अलग-अलग इस विधि का आविष्कार किया है। उनके दल ने इस मामले का विश्लेषण करने के लिए सांख्यिकीय तरीकों का सहारा लिया और दर्शाया कि काई से पानी पीने की बात कैसे फैली थी और वे यह भी दर्शा पाने में सफल रहे थे कि जब कोई चिम्पैंज़ी एक बार किसी अन्य चिम्पैंज़ी को काई के स्पंज से पानी पीते देख ले तो 15 गुना अधिक संभावना होती है कि वह खुद इसे आज़माएगा।

10 साल पहले तक ऐसा माना जाता था कि नकल करके सीखने की क्षमता सिर्फ मनुष्यों में होती है। मगर फिर व्हेल में शिकार करने के तरीकों के विश्लेषण से पता चला था कि वे एक-दूसरे को देखकर सीखती हैं। वैसे शायद आपको लगे कि नकल करना बहुत आसान है मगर है नहीं। जैसे तन्ज़ानिया गोम्बे स्ट्रीम जंगलों के चिम्पैंज़ी किसी टहनी की मदद से छेदों में से दीमकें निकालकर खाते आए हैं। वहीं रहने वाले बैबून उन्हें ऐसा करते देखते हैं मगर उन्होंने ऐसा कभी नहीं किया।

इससे पहले सेन्ट एन्ड्रयूज़ विश्वविद्यालय के एंड्रयू वाइटेन ऐसे 39 व्यवहारों की सूची बना चुके हैं जो चिम्पैंज़ी में ही पाए जाते हैं और वह भी सिर्फ उनके कुछ ही कबीलों में। इससे तो लगता है कि ये उन्होंने एक-दूसरे को देखकर सीखे होंगे न कि ये कुदरती लक्षण रहे होंगे। आज इस सूची में कई और व्यवहार जुड़ चुके हैं मगर आज भी यह सूची कुछ दर्ज़नों तक ही सीमित है। बहरहाल, उस समय जो निष्कर्ष परोक्ष रूप से निकाला गया था, ताज़ा अध्ययन में उसे प्रत्यक्ष रूप से देखा गया है। ***(स्रोत फीचर्स)***